भजन

तर्ज– ये जिदंगी उसी की है

वो धाम के अखण्ड सुख,क्यूँ हमी ने खो दिए
सोच कर ये रो दिए

1–आठों पोहोर चौसठ घड़ी,निसदिन पिऊ पिऊ करते थे
अरस परस सुख लेना देना,आनंद सागर में बहते थे
वो नूरी नजारे कहाँ गए,उनके बिना हम कैसे जीयें

2– जाग्रत बुध लाए धनी,मूल वतन है दिखलाया
कैसा ये लाड लडाया पिया,होश अभी तक न आया
चितवन चर्चा सुन सुन के,इक दिल होके क्यूं न जीये

3– टूटेगी कब ये फरामोशी,कब ये खेल खत्म होगा
आत्म मिलेगी परआत्म से,कब उसका ये मिलन होगा
लाड लज्जत आवे अर्श की, तड़पे है दिल अब फजर के लिए